



पुर्णा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VII

Subject-Hindi

Summative Assessment-2(2021-22)

(अपठित-विभाग)

प्र-1 अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1) सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में ऊँची पर्वतमाला है, उसी पर बिल्कुल शिखर पर कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिल्कुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम-निशान नहीं। बिल्कुल ठगे गये हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था, सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है। इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे-किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जानेवाली बेलों की लड़ियों-सी नदियाँ। मन में तो बस यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँ, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात् हम एक-दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए। धीरे-धीरे मेरी निगाहों ने इस घाटी को पार किया और जहाँ ये हरे खेत और नदियाँ और वन, क्षितिज के धुंधलेपन में, नीले कोहरे में धुल जाते थे, वहाँ पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास, अनुभव किया, उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं।

1) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर: गद्यांश का शीर्षक है-कौसानी का अद्भुत सौंदर्य।

2) लेखक को पहाड़ी नदियाँ किसके समान दिख रही थीं?

उत्तर: लेखक को पहाड़ी नदियाँ आपस में उलझ जाने वाली बेलों जैसी दिख रही थीं।

3) लेखक को ऐसा क्यों लगा कि वह ठगा जा चुका है ?

उत्तर: लेखक अपने साथियों के साथ कौसानी में बरफ़ देखने की इच्छा लेकर गया था, पर बस अड्डे पर पहुँचकर उसने छोटे से उजड़े गाँव में पाया, जहाँ बरफ़ का नाम भी न था। उसे ऐसा लगा कि वह ठगा जा चुका है।

4) कौसानी की पर्वतमाला की सुंदरता का रहस्य क्या है ?

उत्तर: कौसानी पर्वतमाला की सुंदरता का रहस्य है-उसके अंचल में छिपी कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी, जो पचासों मील चौड़ी हरे मखमली कालीन जैसी है। यहाँ गेरू की शिलाओं के काटने से बने लाल रास्ते मोह लेते हैं।

5) कौसानी का सौंदर्य लेखक को कैसा लगा? इसे देखकर लेखक के मन में क्या विचार आया?

उत्तर: लेखक को कौसानी का सौंदर्य अत्यंत सुकुमार, सजीला, और निष्कलंक लगा। ऐसे सौंदर्य वाली धरती को देख उसका मन कर रहा था कि वह जूते उतारकर पैरों को पोंछकर आगे बढ़े।

2) गुरु नानकदेव का आविर्भाव आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व हुआ। भारतवर्ष की मिट्टी में युग के अनुरूप महापुरुषों को जन्म देने का अद्भुत गुण है। आज से पाँच सौ वर्ष पहले का देश उनके कुसंस्कारों में उलझा था। जातियों, संप्रदायों, धर्मों और संकीर्ण कुलाभिमानों से वह खंड-विच्छिन्न हो गया था। देश में नये धर्म के आगंतुकों के कारण एक ऐसी समस्या उठ खड़ी हुई थी, जो इस देश के हजारों वर्षों के लंबे इतिहास में अपरिचित थी। ऐसे ही दुर्घट काल में इस देश की मिट्टी ने ऐसे अनेक महापुरुषों को उत्पन्न किया, जो सड़ी रूढ़ियों, मृतप्राय आचारों, बासी विचारों और अर्थहीन संकीर्णताओं के विरुद्ध प्रहार करने में कुंठित नहीं हुए

और इन जर्जर बातों से परे सबमें विद्यमान सबको नई ज्योति और नया जीवन प्रदान करनेवाले महान् जीवन-देवता की महिमा प्रतिष्ठित करने में समर्थ हुए। इन संतों की ज्योतिष मंडली में गुरु नानकदेव ऐसे संत हैं, जो शरत्काल के पूर्णचंद्र की तरह ही स्निग्ध, उसी प्रकार शांत-निर्मल, उसी प्रकार रश्मि के भंडार थे। कई संतों ने कस-कस के चोटें मारी; व्यंग्य-बाण छोड़े, तर्क की छुरी चलायी, पर महान् गुरु नानकदेव ने सुधा-लेप का काम किया। यह आश्चर्य की बात है कि विचार और आचार की दुनिया में इतनी बड़ी क्रांति ले आनेवाला यह संत इतने मधुर, इतने स्निग्ध, इतने मोहक वचनों का बोलनेवाला है। किसी का दिल दुखाये बिना, किसी पर आघात किए बिना, कुसंस्कारों को छिन्न करने की शक्ति रखनेवाला, नई संजीवनी धारा से प्राणिमात्र को उल्लसित करनेवाला यह संत मध्यकाल की ज्योतिष्क मंडली में अपनी निराली शोभा से शरत् पूर्णिमा के पूर्णचंद्र की तरह ज्योतिष्मान् है।

1) गुरु नानकदेव का संबंध किस काल से है?

उत्तर: गुरु नानकदेव का संबंध मध्यकाल से है।

2) उल्लसित, कुलाभिमान-संधि विच्छेद कीजिए।

उत्तर: उल्लसित = उत् + लसित

कुलाभिमान = कुल + अभिमान

3) दुर्घटकाल किस समय को कहा गया है और क्यों?

उत्तर: आज से करीब पाँच सौ साल पहले के काल को दुर्घटकाल कहा गया है, क्योंकि उस समय देश कुसंस्कारों में उलझकर जाति, धर्म, संप्रदाय आदि के नाम पर लड़ रहा था। उस समय नए धर्मागतुकों का आगमन समस्या बन रहा था।

4) समाज को सुधारने में संतों का क्या योगदान रहा है?

उत्तर: संतों ने समाज में फैली रूढ़ियों, मृतप्राय आचार-विचारों और संकीर्णताओं पर प्रहार किया और सबमें विद्यमान और सबको नया जीवन देने वाले जीवन-देवता की महिमा प्रतिष्ठित करके समाज का कल्याण किया।

5) नानकदेव अन्य संतों से किस तरह भिन्न थे?

उत्तर: अन्य संतों ने लोगों के बुराइयों से बचाने के लिए चोटें मारी, व्यंग्यवाण छोड़े, तर्क के कटु वचन कहे, वहीं गुरुनानक देव ने मधुर, स्निग्ध मोहक वचनों में बिना किसी का दिल दुखाए नई संजीवनीधारा लोगों को प्रदान की।

3) अनुशासन का अर्थ है- नियम-विधियों का पालन करना। इसका सर्वोत्तम रूप है आत्मानुशासन। जिसके तहत स्व को मर्यादा व संयम के दायरे में रखा जाता है। अनुशासित व्यक्ति अपने आचरण से मूल्यों को व्यवहार में ढालकर आदर्श प्रस्तुत करता है। वह आत्म नियंत्रण से विवेकपूर्ण निर्णय लेता है कि कौन-सा कृत्य करने लायक है और कौन-सा त्याज्य। अनुशासन एक प्रकार का भाव है जो लोकमंगल की ओर प्रवृत्त रहता है। समाज, शासन, लोक तथा सदाचार आदि के नियमों का अनुपालन करना अनुशासन का अंग है। अनुशासन नैतिकता से परे नहीं है।

1) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर: उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है- अनुशासन का महत्त्व।

2) 'सर्वोत्तम' आत्मानुशासन में संधि विच्छेद कीजिए।

उत्तर: सर्वोत्तम = सर्व + उत्तम

आत्मानुशासन = आत्म + अनुशासन

3) अनुशासन क्या है? इसका सबसे अच्छा रूप क्या है ?

उत्तर: समाज द्वारा बनाए गए नियमों और विधियों का पालन करना अनुशासन है। किसी व्यक्ति द्वारा स्वयं को

अपने आप ही मर्यादित एवं संयमित दायरे में रखना इसका सबसे अच्छा रूप है।

4) अनुशासित व्यक्ति की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: अनुशासित व्यक्ति विवेकपूर्ण निर्णय लेता है। अनुशासित व्यक्ति अपने व्यवहार में मूल्यों को ढालकर आदर्श प्रस्तुत करता है।

5) अनुशासन और नैतिकता एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: समाज, शासन लोक और सदाचार आदि के नियमों का भली प्रकार पालन करना ही अनुशासन है। इन्हीं नियमों का पालन करना ही नैतिकता है। अतः अनुशासन और नैतिकता एक-दूसरे से अलग नहीं हैं।

4) मैं ही एक अकेला हूँ जो गा सकता हूँ।

मेरे में की संज्ञा भी इतनी व्यापक है,
इसमें मुझसे अगणित प्राणी आ जाते हैं।
मुझको अपने पर अदम्य विश्वास रहा है।
मैं खंडहर को फिर से महल बना सकता हूँ।
जब-जब भी मैंने खंडहर आबाद किए हैं,
प्रलय मेघ भूधाल देख मुझको शरमाए।
मैं मजदूर मुझे देवों की बस्ती से क्या।
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए।

(क) उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में किसका महत्व प्रतिपादित किया गया है?

(ख) स्वर्ग के प्रति मजदूर की विरक्ति का क्या कारण है?

(ग) किन कठिन परिस्थितियों में उसने अपनी निर्भयता प्रकट की है?

(घ) मेरे में की संज्ञा भी इतनी व्यापक है, इसमें मुझ से अगणित प्राणी आ जाते हैं।

उपर्युक्त पंक्तियों का भाव स्पष्ट कर लिखिए।

(ङ) अपनी शक्ति और क्षमता के प्रति उसने क्या कहकर अपना आत्म-विश्वास प्रकट किया है?

उत्तर :

(क) उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में मजदूर की शक्ति का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

(ख) मजदूर निर्माता है। वह अपनी शक्ति से धरती पर स्वर्ग के समान सुंदर बस्तियों बना सकता है। इस कारण उसे स्वर्ग से विरक्ति है।

(ग) मजदूर ने तूफानों व भूकंप जैसी मुश्किल परिस्थितियों में भी घबराहट प्रकट नहीं की है। वह हर मुसीबत का सामना करने को तैयार रहता है।

(घ) इसका अर्थ यह है कि मैं सर्वनाम शब्द श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। कवि कहना चाहता है कि मजदूर वर्ग में संसार के सभी क्रियाशील प्राणी भा जाते हैं।

(ङ) मजदूर ने कहा है कि वह खंडहर को भी आबाद कर सकता है। उसकी शक्ति के सामने भूचाल, प्रलय व बादल भी झुक जाते हैं।

5) जीवन एक कुआ है।

अथाह- अगम
सबके लिए एक सा वृत्ताकार।
जो भी पास जाता है,
सहज ही तृप्ति, शांति, जीवन पाता है
मगर छिद्र होते हैं जिसके पात्र में
रस्सी-डोर रखने के बाद भी,
हर प्रयत्न करने के बाद भी
यह यहाँ प्यासा-का-प्यासा रह जाता है।
मेरे मन! तूने भी, बार-बार

बड़ी बड़ी रसियाँ बटी
रोज-रोज कुँ पर गया
तरह-तरह घड़े को चमकाया,
पानी में डुबाया, उतराया
लेकिन तू सदा ही –
प्यासा गया, प्यासा ही आया ।

और दूध तूने दिया
कभी तो कुँ को
कभी पानी को
कभी सब को
मगर कभी जॉचा नहीं खुद को
परखा नहीं पड़े की तली को ।
चीन्हा नहीं उन असंख्य छिद्रों को
और मूढ़ अब तो खुद को परख देख।

- (क) कविता में जीवन को कुँ क्योँ कहा गया है? कैसा व्यक्ति कुँ के पास जाकर भी प्यासा रह जाता है?
(ख) कवि का मन सभी प्रकार के प्रयासों के उपरांत भी प्यासा क्योँ रह जाता है?
(ग) और तूने दोष दिया.....कभी सबको का आशय क्या है?
(घ) यदि किसी को असफलता प्राप्त हो रही हो तो उसे किन बातों की जॉच-परख करनी चाहिए?
(ङ) 'चीन्हा नहीं उन असंख्य छिद्रों को' – यहाँ असंख्य छिद्रों के माध्यम से किस ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर :

- (क) कवि ने जीवन को कुँ कहा है, क्योँकि जीवन भी कुँ की तरह अथाह व अगम है। दोषी व्यक्ति कुँ के पास जाकर भी प्यासा रह जाता है।
(ख) कवि ने कभी अपना मूल्यांकन नहीं किया। वह अपनी कमियों को नहीं देखता। इस कारण वह सभी प्रकार के प्रयासों के बावजूद प्यासा रह जाता है।
(ग) और तूने दोष दिया....कभी सबको का आशय है कि हम अपनी असफलताओं के लिए दूसरों को दोषी मानते हैं।
(घ) यदि किसी को असफलता प्राप्त हो तो उसे अपनी कमियों के बारे में जानना चाहिए। उन्हें सुधार करके कार्य करने चाहिए।
(ङ) यहाँ असंख्य छिद्रों के माध्यम से मनुष्य की कमियों की ओर संकेत किया गया है।

(लेखन-विभाग)

➤ अनुच्छेद लिखिए ।

1) महात्मा गांधी पर अनुच्छेद

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात राज्य के काठियावाड़ प्रदेश में स्थित पोरबन्दर शहर में 2 अक्टूबर, 1869 ई० को हुआ था । उनके पिता राजकोट रियासत के दीवान के । उनकी माता बड़ी सज्जन और धार्मिक विचारों वाली महिला थी । उन्होंने बचपन से ही गांधी को धार्मिक कथायें सुना-सुना कर उन्हें सात्विक प्रवृत्ति बना दिया था सात वर्ष की आयु में उन्हें स्कूल भेजा गया । स्कूल की पढ़ाई में वे औसत दर्जे के विद्यार्थी रहे । लेकिन वे अपना कक्षा में ठीक समय पर नियमित रूप से पहुंचते थे और पाठ को मन लगाकर पढ़ते थे । मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद वे कॉलेज में पढ़े और बाद में कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गये । कुछ समय के बाद सौभाग्य से उन्हें एक बड़ा भारतीय व्यापारी मिला, जिसका दक्षिण अफ्रीका में बड़ा कारोबार था । उसे अपनी किसी उलझे मुकदमे में दक्षिण अफ्रीका में एक अच्छे वकील की जरूरत थी । उसने गांधी जी काफ़ी बड़ी फीस देकर इस काम को करने को तैयार कर लिया । उसने गाँधी जी को दक्षिण अफ्रीका बुला लिया । दक्षिण अफ्रीका पहुंच कर उन्होंने भारत मूल के लोगो को बड़ी दयनीय अवस्था में देखा । उन्होंने उनकी दशा सुधारने का फैसला कर

लिया और भारतीयों को उनके अधिकारों का बोध कराया। उन्होंने उनमें जागृति लाकर उन्हें संगठित किया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के लिए जिस कांग्रेस की स्थापना की, आज भी वह वहाँ की प्रमुख पार्टी है। गांधी जी और उनके साथियों को कैद करके सजायें दी गईं, लेकिन उन्होंने अपनी लड़ाई नहीं छोड़ी। इसके साथ ही उन्होंने कांग्रेस पार्टी के सामने-समाज सुधार और हिन्दू-मुस्लिम एकता जैसे रचनात्मक कार्यों को सुझाया। छुआछूत के खिलाफ उन्होंने जोरदार आवाज उठाई और अछूतों को 'हरिजन' जैसा आदरणीय संबोधन दिया। हिन्दू-मुस्लिम एकता की रक्षा पर तो उन्होंने अपनी जान तक दे दी। ब्रिटिश सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने का भरसक प्रयास किया। कई बार उन्होंने गाँधी जी तथा अन्य भारतीय नेताओं को पकड़ कर जेल में डाल दिया। लेकिन उन्होंने भारत को स्वतन्त्रता दिलवा दी। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ। गांधी जी की अकस्मात् हत्या कर दी गई। एक पागल नौजवान ने उन्हें प्रार्थना-सभा में गोलियों से भून दिया। वह गांधी जी के विचारों का घोर विरोधी था। उनकी हत्या 30 जनवरी, 1948 को हुई।

2) मकर संक्रांति

भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक मुख्य त्योहार मकर संक्रांति भी है जिसे लगभग पूरे भारत भर में मनाया जाता है यह त्योहार हर वर्ष एक निश्चित तारीख को ही मनाया जाता है इस त्योहार को जनवरी माह की 14 तारीख को मनाया जाता है। इस त्योहार को सभी राज्यों में अलग-अलग नाम और विभिन्न विचारधाराओं के साथ मनाया जाता है। पुराने ग्रंथों के अनुसार इस दिन सूर्य धनु राशि से निकल कर मकर राशि में प्रवेश करता है इसलिए इस त्योहार को मकर संक्रांति का नाम दिया गया है। इस दिन कई जगह तिल के लड्डू बनाए जाते हैं तो कुछ जगह पतंगे उड़ाई जाती है और उत्तर प्रदेश राज्य में इस दिन खिचड़ी बनाई जाती है। और जिन राज्यों में पवित्र नदियां बहती हैं वहाँ के लोग सुबह उठ कर उन नदियों में स्नान करते हैं और सूर्य देवता को नमन करते हैं। इस तरह यह त्योहार विभिन्न विचारधाराओं और संस्कृतियों का मिलाजुला रूप है। हिंदू धर्म में प्रमुख रूप से मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक मकर संक्रांति भी है जिसे हिंदू धर्म के लोग बड़े ही धूमधाम से हर साल जनवरी माह की 14 जनवरी को मनाते हैं। यह त्योहार हर साल 14 जनवरी को ही मनाया जाता है कुछ ही ऐसे वर्ष आते हैं जिसमें इस त्योहार को 15 जनवरी को मनाया जाता है। मकर संक्रांति का यह त्योहार पूरे भारत के साथ-साथ नेपाल भूटान बांग्लादेश जैसे देशों में भी धूमधाम से मनाया जाता है नेपाल में तो इस त्योहार के दिन राजकीय अवकाश भी घोषित किया जाता है। यह त्योहार बसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक होता है इस समय चारों ओर मौसम खुशनुमा होता है और मौसम में एक अलग ही ताजगी भरी हुई होती है। आज भागदौड़ भरी जिंदगी में त्योहार ही भारत की सबसे बड़ी शक्ति है क्योंकि त्योहारों के कारण ही लोग एक दूसरे को जानते हैं और इन्हीं के कारण वह अपने सुख दुख बांटते हैं। इन्हीं त्योहारों के कारण भारत के लोगों में विभिन्नताएं होते हुए भी यहां पर एकता देखने को मिलती है। इन्हीं त्योहारों में से एक मकर संक्रांति भी है जो कि हिंदू धर्म में अपना एक प्रमुख महत्व रखता है यह त्योहार पूरे भारतवर्ष के साथ-साथ नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश आदि देशों में भी मनाया जाता है। त्योहार हमेशा लोगों को जोड़ने का काम करते हैं इसीलिए सभी लोगों को त्योहार अच्छे लगते हैं।

3) हिन्दी दिवस

हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है और हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत वर्ष 1949 से हुई थी। 14 सितम्बर 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था तब से इस भाषा के प्रचार और प्रसार के लिए प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस हिन्दी दिवस मनाने की शुरुआत हुई थी। भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को भारत गणराज्य की आधिकारिक राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया था हालांकि, इसे 26 जनवरी 1950 को देश के संविधान द्वारा आधिकारिक रूप में उपयोग करने का विचार स्वीकृत किया गया था। हिन्दी दिवस को सब बहुत ही खुशी से मनाते हैं। यह भारतीयों के लिए गर्व का क्षण था जब भारत की संविधान सभा ने हिंदी को देश की आधिकारिक राजभाषा के रूप में अपनाया था। संविधान ने वही अनुमोदित किया और देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी आधिकारिक राजभाषा बन गई। 14 सितंबर, जिस दिन भारत की संविधान सभा ने हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया, हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। कई स्कूल, कॉलेज और कार्यालय इस

दिन महान उत्साह के साथ मनाते हैं। कई लोग हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के महत्व के बारे में बात करने के लिए आगे आते हैं। स्कूल हिंदी बहस, हिन्दी दिवस पर कविता और कहानी कहने वाली प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मेजबानी करते हैं। प्रत्येक वर्ष, ये दिन हमें हमारी वास्तविक पहचान की याद दिलाता है और हमें अपने देश के लोगों के साथ एकजुट करता है। हमें संस्कृति और मूल्यों को बरकरार रखना चाहिए और ये दिन इसके लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है। हिंदी दिवस एक ऐसा दिन है जो हमें देशभक्ति भावना के साथ प्रेरित करता है।

➤ पत्र-लेखन लिखिए।

1) गंदगी की सूचना देते हुए नगर निगम अधिकारी को पत्र ।

B-4/13 अंकुर विहार, लोनी

गाजियाबाद।

दिनांक-16 अगस्त

सेवा में

नगर निगम अधिकारी

लोनी क्षेत्र, गाजियाबाद।

विषय-हमारे क्षेत्र में फैली गंदगी की सूचना हेतु पत्र।

महोदय

मैं अंकुर तथा आसपास के इलाकों में फैली गंदगी तथा सफ़ाई कर्मचारियों की अकर्मण्यता के विषय में आपको सूचित करना चाहता हूँ।

यहाँ जगह-जगह गंदगी के ढेर लगे हैं तथा गलियों में यहाँ-वहाँ कूड़ा फैला है। सफ़ाई कर्मचारी सप्ताह में एक बार भी सफ़ाई नहीं करते तथा नगर निगम की गाड़ियाँ महीनों तक दिखाई नहीं पड़तीं। चारों तरफ़ मक्खी, मच्छर तथा बदबू का साम्राज्य है।

आशा है आप इस विषय में अवश्य कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

ओजस्व तिवारी।

2) मित्र को परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र।

परीक्षा भवन,

अ. ब. स.

20-जून-2020

प्रिय मित्र दीपक,

सदा सुखी रहो।

मैं कुशल-मंगल हूँ और आशा करता हूँ कि वहाँ पर भी सभी कुशल-मंगल होंगे। काफी समय हो गया था न तो तुमसे बात हो पाई और न ही तुम्हारे घर पर किसी से बात कर पाया।

तुम्हारे पिता को फोन किया, तो उनसे ज्ञात हुआ की तुम बोर्ड परीक्षा में मुरादाबाद जिले में प्रथम आये हो। इस समाचार को सुनकर मन खुशी से भर गया। मुझे तो पहले से ही विश्वास था की तुम प्रथम श्रेणी में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होंगे लेकिन यह जानकार की तुमने परीक्षा में प्रथम श्रेणी के साथ-साथ जिले में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया है ,मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही। इस परीक्षा के लिए तुम्हारे परिश्रम और नियमितता ने ही वास्तव में ऊँचाई तक पहुँचाया है। मुझे पूरी आशा थी की तुम्हारा परिश्रम रंग दिखायेगा और मेरा अनुमान सच साबित हुआ। तुमने प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया की दृढ संकल्प और कठिन परिश्रम से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है।

मैं सदैव यह कामना करूँगा की तुम्हें जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आने का सौभाग्य प्राप्त हो और तुम इसी प्रकार परिवार और विद्यालय का गौरव बढ़ाते रहो। इस प्रकार मेहनत करते रहो और सभी को प्रसन्नता प्रदान करते रहो।

तुम्हारा मित्र
आकाश

3) विदेश यात्रा पर जाने वाले मित्र को उसकी मंगलमय यात्रा की कामना करते हुए पत्र लिखिए।

14-सी, सूर्या अपार्टमेंट्स

पटपड़गंज

नई दिल्ली-92

दिनांक: 20 मार्च, 20xx

प्रिय मित्र सिद्धार्थ

सप्रेम नमस्कार

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर अत्यंत खुशी हुई कि तुम कंप्यूटर की वेब साइट डिजाइनिंग प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर विजयी रहे हो। अब तुम इस प्रतियोगिता के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने के लिए कनाडा जा रहे हो। तुम्हें मेरी ओर से हार्दिक बधाई। काफी समय से तुम कनाडा जाना भी चाहते थे, यह अवसर तो तुम्हारे लिए 'आम के आम, गुठलियों के दाम' जैसा है। तुम कनाडा घूमने की अपनी चिर अभिलाषित इच्छा को भी पूरा कर लगे तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में भाग भी ले लगे।

मुझे विश्वास है कि तुम इस प्रतियोगिता में भी अवश्य विजयी रहोगे। दृढ़-निश्चय, लगन व परिश्रम की भावना तुम में कूट-कूट कर भरी है। तुम जिस कार्य में भी हाथ डालते हो उसमें सफलता प्राप्त करके ही रहते हो। कनाडा में तो तुम्हारे मामा जी व मामी जी भी हैं। उनसे भी इसी बहाने तुम्हारी मुलाकात हो जाएगी। इस यात्रा में तुम्हारे साथ तुम्हारे मित्र भी जा रहे हैं, इसलिए तुम यात्रा का आनंद अच्छे से उठा सकोगे।

मैं तुम्हारी इस महत्वपूर्ण यात्रा पर अपनी शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ। ईश्वर तुम्हारी यात्रा को मंगलमय बनाए और तुम इस प्रतियोगिता में विजयी रहो। अपना तथा अपने देश का नाम ऊँचा करो। हमें तुम पर गर्व है।

पुनः मंगलमय यात्रा के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। चाचा जी तथा चाची जी को चरण-स्पर्श तथा मोनू को प्यार।

सद्भावनाओं सहित

तुम्हारा अभिन्न मित्र

शैलेश

➤ दिनचर्या-लेखन लिखिए।

1) परिक्षा मे कम अंक लाने पर अपने गुण-दोष की समीक्षा।

महेशवाड़ा

28 मार्च, 2018

आज वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। इस बार फिर मैं द्वितीय स्थान पर ही आई। मुझे ऐसा लगता था कि इस बार मैं प्रथम स्थान प्राप्त करूँगी। अब मेरी समझ में आ रहा है कि हर बार मुझे दूसरा स्थान ही क्यों मिलता रहा है। मुझे स्मरण है कि मैंने चार-पाँच प्रश्नों के उत्तर कई बार काटकर लिखे हैं। ऑभर राइटिंग भी हुई है। मेरी लिखावट भी साफ-सुथरी नहीं होती है। एक बात और है, मुझमें आत्मविश्वास की जबर्दस्त कमी है। मैं कक्षा में भी चुपचाप बैठी रहती हूँ। यदि यही स्थिति रही तो निस्सन्देह, मैं हर जगह मात खा खा जाऊँगी। मुझे आत्मविश्वास जगाना ही होगा।

ऋचा

2) रेल यात्रा के दौरान हुए पॉकेटमारी से हुई परेशानी।

लखनऊ

27 अगस्त, 2018

रेल-यात्रा का सारा मजा ही किरकिरा हो गया जब कानपुर में मैंने अपनी कटी हुई जेब देखी। पटना से चलते समय तक तो मेरे सारे रुपये महफूज थे। मुझे लगता है कि मुगलसराय से इलाहाबाद के बीच अतिशय भीड़-भाड़ में ही मेरी पॉकेटमारी हुई। पाँच हजार मासिक वेतन कमानेवाले के लिए दो हजार रुपये निकल जाना कितना दुखदायी होता है- यह मुझसे ज्यादा कौन अनुभव कर सकता है ? लौटती बार माताजी के लिए दवाई भी लानी थी। समझ में नहीं आता अब इसका बन्दोबस्त कैसे हो पाएगा। अब तो मुझे हर यात्री पॉकेटमार ही नजर आता है।

गणेश गौतम

3) पुरस्कार प्राप्त होने के बाद जो खुशी हुआ।

लखनऊ

23 अक्टूबर, 2020, बुधवार

रात्रि 9 : 30 बजे

आज का दिन बहुत अच्छा बीता। विद्यालय की प्रार्थना सभा में समस्त विद्यार्थियों के सामने मुझे अंतर्विद्यालयी काव्य-पाठ प्रतियोगिता में जीता गया पुरस्कार दिया गया। घर आने पर मैंने माँ-पिता जी को पुरस्कार दिखाया, तब वे फूले नहीं समाए। दादी माँ ने मुझे आशीर्वाद दिया। अब मैं खाना खाने के बाद सोने जा रहा हूँ।

रोहित कुमार

➤ चित्र- वर्णन कीजिए।

विद्यालय की कलाविधि में कुछ चित्र (पेंटिंग्स) बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। इसके लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

मॉडर्न स्कूल की रंग रचना सभा द्वारा बनाए गए चित्रों एवं कलाकृतियों की बिक्री

आकर्षक एवं स्वनिर्मित चित्र



मूल्य केवल 50 से 150/-

स्थान : विद्यालय सभागार

समय : प्रातः 10:00 बजे से सांय 5:00 बजे तक

सौजन्य से : रचना रंग सभा, मॉडर्न स्कूल, चण्डीगढ़

दूरभाष : 9876543210

हिंदी की पुस्तकों की प्रदर्शनी में आधे मूल्य पर बिक रही महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को खरीदकर लाभ उठाने के लिए लगभग 25-30 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए।

सेल **सुनहरा मौका/अवसर** **सेल**

हिंदी से जुड़े और साहित्य के शौकीन पाठकों के लिए जल्द ही मिल रहा है सुनहरा मौका। आप ही के शहर नई दिल्ली में हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन हो रहा है, जिसमें हिंदी की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें आधे मूल्य पर उपलब्ध होगी।

जल्दी कीजिए!
ऐसा अवसर फिर
नहीं मिलेगा।



स्थान -
प्रगति मैदान, नई दिल्ली।

अपने पुराने मकान के बेचने सम्बन्धी विज्ञापन का आलेख लगभग 25-30 शब्दों में तैयार कीजिए।

बिकाऊ है **बिकाऊ है** **बिकाऊ है**

200 वर्ग गज में निर्मित 2 मंजिल एक पुराना रहने योग्य मकान
बाजार, सब्जी मण्डी, मेन सड़क, स्कूल तथा रेलवे स्टेशन के नजदीक
बाबू गुलाब राय मार्ग, देहली गेट आगरा।

सम्पर्क करें - किशन सिंह
9872XXXXXX

(व्याकरण-विभाग)

➤ कारक-

1) कर्ता कारक

- (i) राम ने पत्र लिखा।
- (iii) रमेश ने आम खाया।
- (v) राजेन्द्र ने पत्र लिखा।
- (vii) पुजारी जी पूजा कर रहे हैं।
- (ix) सीता खाती है।
- (ii) हम कहाँ जा रहे हैं।
- (iv) सोहन किताब पढ़ता है।
- (vi) अध्यापक ने विद्यार्थियों को पढ़ाया।
- (viii) कृष्ण ने सुदामा की सहायता की।

कर्म कारक-

- (i) अध्यापक, छात्र को पीटता है।
- (iii) ममता सितार बजा रही है।
- (v) गोपाल ने राधा को बुलाया।
- (ii) सीता फल खाती है।
- (iv) राम ने रावण को मारा।
- (vi) मेरे द्वारा यह काम हुआ।

करण कारक-

- (i) बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
- (iii) राम ने रावण को बाण से मारा।
- (v) कलम से पत्र लिख है।
- (ii) बच्चा बोतल से दूध पीता है।
- (iv) सुनील पुस्तक से कहानी पढ़ता है।

सम्प्रदान कारक

- (i) गरीबों को खाना दो।
- (iii) माँ बेटे के लिए सेब लायी।
- (v) मैं सूरज के लिए चाय बना रहा हूँ।
- (viii) वे मेरे लिए उपहार लाये हैं।
- (ii) मेरे लिए दूध लेकर आओ।
- (iv) अमन ने श्याम को गाड़ी दी।
- (vii) भूखे के लिए रोटी लाओ।
- (ix) सोहन रमेश को पुस्तक देता है।

अपादान कारक :-

- (i) पेड़ से आम गिरा।
- (iii) सुरेश शेर से डरता है।
- (v) लड़का छत से गिरा है।
- (vii) आसमान से बूँदें गिरी।
- (ix) दूल्हा घोड़े से गिर पड़ा।
- (xi) पृथ्वी सूर्य से दूर है।
- (ii) हाथ से छड़ी गिर गई।
- (iv) गंगा हिमालय से निकलती है।
- (vi) पेड़ से पत्ते गिरे।
- (viii) वह साँप से डरता है।
- (x) चूहा बिल से बाहर निकला।

संबंध कारक

- (i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।
- (iii) यह सुरेश का भाई है।
- (v) राम का लड़का, श्याम की लडकी, गीता के बच्चे।
- (vii) लडके का सिर दुःख रहा है।
- (ii) सेना के जवान आ रहे हैं।
- (iv) यह सुनील की किताब है।
- (vi) राजा दशरथ का बड़ा बेटा राम था।

अधिकरण कारक-

- | | |
|---|-----------------------------------|
| (i) हरी घर में है। | (ii) पुस्तक मेज पर है। |
| (iii) पानी में मछली रहती है। | (iv) फ्रिज में सेब रखा है। |
| (v) कमरे के अंदर क्या है। | (vi) कुर्सी आँगन के बीच बिछा दो। |
| (vii) महल में दीपक जल रहा है। | (viii) मुझमें शक्ति बहुत कम है। |
| (ix) रमा ने पुस्तक मेज पर रखी। | (x) वह सुबह गंगा किनारे जाता है। |
| (xi) कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था। | (xii) तुम्हारे घर पर चार आदमी है। |
| (xiii) उस कमरे में चार चोर हैं। | |

संबोधन कारक-

- | | |
|--------------------------------|------------------------------|
| (i) हे ईश्वर ! रक्षा करो। | (ii) अरे ! बच्चो शोर मत करो। |
| (iii) हे राम ! यह क्या हो गया। | (iv) अरे भाई ! यहाँ आओ। |
| (v) अजी तुम उसे क्या मरोगे ? | (vi) बाबूजी ! आप यहाँ बैठें। |
| (vii) अरे राम ! जरा इधर आना। | (viii) अरे ! आप आ गये। |

वाक्य

* वाक्य के प्रकार लिखिए।

- 1) क्या आप आगरा जा रहीं हैं ? - प्रश्नवाचक वाक्य
- 2) क्या उसने झूठ बोला था ?- प्रश्नवाचक वाक्य
- 3) आपकी यात्रा शुभ हो।- इच्छावाचक वाक्य
- 4) लड़कियाँ नृत्य कर रहीं हैं।- विधानवाचक वाक्य
- 5) यदि तुम भी मेरे साथ रहोगी तो मुझे अच्छा लगेगा।- संकेतवाचक वाक्य
- 6) वे बाजार नहीं गए।- निषेधवाचक वाक्य
- 7) ओह ! कितना सुन्दर दृश्य है।- विस्मयादिवाचक वाक्य
- 8) वर्षा होती तो अनाज पैदा होता।- संकेतवाचक वाक्य
- 9) हो सकता है आज धूप न निकले।- निषेधवाचक वाक्य
- 10) कृपया फोन पर जवाब अवश्य देना।- आज्ञावाचक वाक्य
- 11) राम क्या कर रहा है ?- प्रश्नवाचक वाक्य
- 12) आज अच्छी कमाई हो जाती।- विधानवाचक वाक्य
- 13) शायद महँगाई कुछ कम हो जाए।- इच्छावाचक वाक्य
- 14) वाह ! भारत ने विश्वकप जीत लिया।- विस्मयादिवाचक वाक्य
- 15) यहाँ गाड़ी खड़ी करना मना है।- निषेधवाचक वाक्य
- 16) भारत एक देश है।- विधानवाचक वाक्य
- 17) दशरथ कहाँ के राजा है?- प्रश्नवाचक वाक्य

- 18) राम का मकान उधर है।- विधानवाचक वाक्य
- 19) नववर्ष मंगलमय हो।- इच्छावाचक वाक्य
- 20) ओह! कितनी ठंडी रात है।- विस्मयादिवाचक वाक्य
- 21) कृपया शांति बनाये रखें।- आज्ञावाचक वाक्य
- 22) राम के पिता का नाम दशरथ है।- विधानवाचक वाक्य

मुहावरा

मुहावरा

- 'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ है 'अभ्यास होना' या 'आदी होना'। इस प्रकार मुहावरा शब्द अपने-आप में स्वयं मुहावरा है, क्योंकि यह अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर असामान्य अर्थ प्रकट करता है। वाक्यांश शब्द से स्पष्ट है कि मुहावरा संक्षिप्त होता है, परन्तु अपने इस संक्षिप्त रूप में ही किसी बड़े विचार या भाव को प्रकट करता है।

1) अंगारों पर पैर रखना- (स्वयं को खतरे में डालना)

- व्यवस्था के खिलाफ लड़ना अंगारों पर पैर रखना है।

2) आँख लगना- (झपकी आना)

- रात एक बजे तक कार्य किया, फिर आँख लग गई।

3) इन तिलों में तेल नहीं- (किसी भी लाभ की आशा न करना)

- कपिल ने कारखाने को देख सोच लिया इन तिलों में तेल नहीं और बैंक से ऋण लेकर बहन का विवाह किया।

4) उल्टी माला फेरना- (अहित सोचना)

- अपने दोस्त के नाम की उल्टी माला फेरना बुरी बात है।

5) एक ही लकड़ी से हाँकना- (अच्छे-बुरे की पहचान न करना)

- कुछ अधिकारी सभी कर्मचारियों को एक ही लकड़ी से हाँकते हैं।

6) ओस पड़ जाना- (लज्जित होना)

- ऑस्ट्रेलिया से एक दिवसीय श्रृंखला बुरी तरह हारने से भारतीय टीम पर ओस पड़ गई।

7) कान भरना- (चुगली करना)

- मंथरा ने कैकेई के कान भरे थे।

8) कान कतरना- (अधिक होशियार हो जाना)

- राम चालाकी में बड़े-बड़ों के कान कतरता है।

9) ख्याली पुलाव पकाना- (कल्पनाएँ करना)

- मूर्ख व्यक्ति ही सदैव ख्याली पुलाव पकाते हैं, क्योंकि वे कुछ करने से पहले ही अपने ख्यालों में खो

जाते हैं।

10)गोल कर जाना- (गायब कर देना)

- चालाक व्यक्ति सही बातों का उत्तर गोल कर जाते हैं।

11) घी के दीए जलाना- (खुशियाँ मनाना)

- पृथ्वीराज की मृत्यु सुनकर जयचन्द ने घी के दीए जलाए।

➤ हिंदी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न निम्नलिखित है-

(1) अल्प विराम (Comma)(,)

(2) अर्द्ध विराम (Semi colon) (;)

(3) पूर्ण विराम(Full-Stop) (।)

(4) उप विराम (Colon) [:]

(5) विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of Interjection)(!)

(6) प्रश्नवाचक चिह्न (Question mark) (?)

(7) कोष्ठक (Bracket) (())

(8) योजक चिह्न (Hyphen) (-)

(9) अवतरण चिह्न या उद्धरणचिह्न (Inverted Comma) ("... ")

(10) लाघव चिह्न (Abbreviation sign) (o)

(11) आदेश चिह्न (Sign of following) (:-)

(12) रेखांकन चिह्न (Underline) (_)

(13) लोप चिह्न (Mark of Omission)(...)

➤ वाच्य

➤ वाच्य के भेद – Vachya ke Bhed :

1. कर्तृवाच्य

2. कर्मवाच्य

3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य :-

जिस वाक्य में कर्ता मुख्य हो और क्रिया कर्ता के लिंग, वचन एवं पुरुष के अनुसार हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।
जैसे –

a) लड़किया बाजार जा रही है।

b) मैं रामायण पढ़ रही है।

c) कुमकुम खाना खाकर सो गई।

इन वाक्यों में जा रही है, पढ़ रहा हूँ, सो गई ये सभी क्रियाएं कर्ता के अनुसार आई है।

2. कर्मवाच्य :-

जिस वाक्य में कर्म मुख्य हो तथा इसकी सकर्मक क्रिया के लिंग, वचन व पुरुष कर्म के अनुसार हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

जैसे –

a) लड़कियों द्वारा बाजार जाया जा रहा है।

b) मेरे द्वारा रामायण पढ़ी जा रही है।

c) वर्षा से पुस्तक पढ़ी गई।

इन वाक्यों में पढ़ी जा रही है, पढ़ी गई क्रियाएं कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार आई है।

3. भाववाच्य :-

जिस वाक्य में अकर्मक क्रिया का भाव मुख्य हो, उसे भाववाच्य कहते हैं।
जैसे -

- हमसे वहाँ नहीं ठहरा जाता।
- उससे आगे क्यों नहीं पढ़ा जाता।
- मुझसे शोर में नहीं सोया जाता।

इन वाक्यों में ठहरा जाता, पढ़ा जाता और सोया जाता क्रियाएं भाववाच्य की है।

कर्तृवाच्य:

- लड़किया बाजार जा रही है।
- मैं रामायण पढ़ रहा हूँ।
- ममता ने रामायण पढ़ी।
- लता गाना गाएगी।
- धर्मवीर वेद पढ़ेगा।
- तुम फूल तोड़ोगे।
- नौकर चाय लाएगा।

कर्मवाच्य:

- लड़कियों द्वारा बाजार जाया जा रहा है।
- मेरे द्वारा रामायण पढ़ी जा रही है।
- ममता से रामायण पढ़ी गई।
- लता से गाना गाया जाएगा।
- धर्मवीर से वेद पढ़ा जाएगा।
- तुमसे फूल तोड़े जाएंगे।
- नौकर द्वारा चाय लाई जाएगी।

भाववाच्य:

- राम से तेज दौड़ा जाता है।
- मुझसे सर्दियों में नहीं नहाया जाता।
- आशा से नहीं हँसा जाता।
- बच्चे से खूब सोया गया।
- रमा से पढ़ा नहीं जाता।
- मुझसे हँसा जाता है।
- मोर से ऊँचा नहीं उड़ा जाता।

➤ अनेक शब्दों के एक शब्द

- जो कभी बूढ़ा न हो - अजर
- जिसकी कभी मृत्यु न हो- अमर
- जो दिखाई न दे - अदृश्य
- जिसे जाना न जा सके- अज्ञेय
- जो दिया न जा सके - अदेय
- जो पिया न जा सके- अपेय
- जो खाया न जा सके- अखाद्य

- 8- जिसे छूना वर्जित हो – अस्पृश्य
- 9- जिसे पहले पढ़ा न हो – अपठित
- 10- जिसे टाला न जा सके- अवश्यम्भावी
- 11- जिसके बारे में कुछ पता न हो- अज्ञात
- 12- जिसे जीता न जा सके- अजेय
- 13- जिसे हराया न जा सके- अपराजेय
- 14- जिसका उल्लंघन न किया जा सके- अनुलंघनीय
- 15- पीछे चलने वाला – अनुगामी
- 16- साथ चलने वाला – सहचर
- 17- मन की बात जानने वाला- अंतर्दामी
- 18- सब कुछ देख लेने वाला- सर्वदृष्टा
- 19- सब कुछ जानने वाला- सर्वज्ञानी, सर्वज्ञ
- 20- अपने आप में मग्न रहने वाला- अंतर्मुखी

(साहित्य-विभाग)

➤ सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

- 1- साँचा मीत किसे कहा गया है?
 (a) विपत्ति की कसौटी पर खरा उतरनेवाला (b) सच बोलनेवाला
 (c) संपत्ति हड़पनेवाला (d) मिलनेवाला
- 2- जाल पड़ने पर पानी क्यों बह जाता है?
 (a) आगे जाने के लिए (b) मछलियों का साथ निभाने के लिए
 (c) मछलियों से दूरी बनाने के लिए (d) मछलियों से सच्चा प्रेम न करने के लिए
- 3- रामन मल्लिका किसकी हँसी उड़ा रहे थे।
 (a) जॉर्ज की (b) अप्पू की
 (c) कंचों की (d) उपर्युक्त सभी
- 4- अप्पू के विद्यालय के रास्ते में किसके पेड़ों की घनी छाँव थी?
 (a) पीपल के (b) नीम के
 (c) आम के (d) शीशम के
- 5- कवि पर किसने व्यंग्य किया?
 (i) अक्ल ने। (ii) सहपाठियों ने
 (iii) पड़ोसियों ने (iv) घमंड ने
- 6- तिनका कहाँ से उड़कर आया था?
 (i) पास से (ii) पैरों के तले से
 (iii) छत से (iv) बहुत दूर से
- 7- दोनों शावकों ने आरंभ में कहाँ रहना शुरू किया?
 (i) मेज़ के नीचे (ii) रद्दी की टोकरी में
 (iii) अलमारी के पीछे (iv) पिंजरे में
- 8- लेखिका ने मोर के बच्चों को कितने रुपए में खरीदा?
 (i) पच्चीस रुपए में (ii) तीस रुपए में
 (iii) पैंतीस रुपए में (iv) चालीस रुपए में
- 9- लेखिका को क्या ज्ञात नहीं हो पाया?
 (i) शावकों की प्रजाति का

- (ii) नीलकंठ के बढ़ने का रहस्य
(iii) नीलकंठ कब बाकी जानवरों का संरक्षक
 (iv) अन्य जानवर उसके संरक्षक बन गए।
- 10- दही कौन बिलो रही है?
 (i) राधा (ii) यशोदा
(iii) गोपियाँ (iv) ग्वाल-बाल।
- 11- कृष्ण को जगाने के लिए द्वार पर कौन खड़े हैं?
 (i) सारे ग्वाल-बाल (ii) यशोदा
 (iii) राधा **(iv) देव और दानव।**
- 12- ग्वाल-बालकों के हाथ में क्या है?
 (i) मक्खन **(ii) रोटी-मक्खन**
 (iii) रोटी (iv) मिसरी।
- 13- वीर कुंवर सिंह का जन्म किस राज्य में हुआ था?
 (a) बंगाल (b) उत्तर प्रदेश
(c) बिहार (d) उड़ीसा।
- 14- 11 मई 1857 को भारतीय सैनिकों ने किस पर कब्जा कर लिया?
 (a) लखनऊ (b) आरा
 (c) मेरठ **(d) दिल्ली**
- 15- आश्रम में कितनी पुस्तकें रखने की बात हो रही थी?
 (i) 1000 (ii) 1500
 (iii) 2000 **(iv) 3000**
- 16- कुछ समय बाद आगंतुकों की संख्या आश्रम में कितने होने वाली थी?
 (i) 30 (ii) 40
(iii) 50 (iv) 60
- 17- कवि कैसा गीत नहीं लिख पा रहा है
 (i) रुद्र गीत (ii) क्रांति गीत
(iii) मारक गीत (iv) प्रेम गीत।
- 18- कवि की वीणा में कैसी चिनगारियाँ आ बैठी हैं?
 (i) शांति की (ii) भ्रांति की
(iii) क्रांति की (iv) उपर्युक्त सभी।
- 19- 'उथल-पुथल मचने' से कवि का क्या अभिप्राय है?
 (i) विद्रोह का होना **(ii) क्रांति का आगमन होना**
 (iii) आँधी का आना (iv) समाज में परिवर्तन का होना

* अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1) जीवन में मित्रों की अधिकता कब होती है?

उत्तर- जब जीवन में काफ़ी धन-दौलत, मान-सम्मान बढ़ जाता है तो मित्रों और शुभचिंतकों की संख्या बढ़ जाती है।

2) 'जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता' इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर- जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता। इसका यह प्रमाण है कि मछलियों के जाल में फँसते ही जल उन्हें

अकेला छोड़कर आगे बह जाता है।

3) रहीम ने क्वार मास के बादलों को कैसा बताया है?

उत्तर- रहीम ने क्वार महीने के बादलों को थोथा यानी बेकार गरजने वाला बताया है।

4) कवि छत की मुंडेर पर किस भाव में खड़ा था?

उत्तर- कवि छत की मुंडेर पर घमंड से भरे हुए भाव में खड़ा था।

5) कवि की बेचैनी का क्या कारण था?

उत्तर- कवि की आँख में तिनका गिर जाने के कारण वह बेचैन हो गया और उसकी आँख लाल हो गई व दुखने लगी।

6) आस-पास के लोगों ने क्या उपहास किया?

उत्तर- आस-पास के लोग कपड़े की नोक से कवि की आँख में पड़ा तिनका निकालने का प्रयास करने लगे।

7) उत्तर भारत में किस बात में बदलाव आया है?

उत्तर- उत्तर भारत में खान-पान की संस्कृति में बदलाव आया है।

8) आजकल बड़े शहरों में किसका प्रचलन बढ़ गया है?

उत्तर- आजकल बड़े शहरों में फ़ास्ट फूड चाइनीज नूडल्स, बर्गर, पीजा तेज़ी से बढ़ा है।

9) स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में क्या फ़र्क आया है? इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर- स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में कमी आई है जिससे लोगों का आकर्षण कम हुआ है। इसका कारण है उन वस्तुओं में मिलावट किया जाना, जिनसे तैयार की जाती है।

10) मथुरा-आगरा के कौन-से व्यंजन प्रसिद्ध रहे हैं?

उत्तर- मथुरा के पेड़े और आगरा का दलमोट-पेठा प्रसिद्ध है।

11) गोपियाँ दही क्यों बिलो रही थीं?

उत्तर- गोपियाँ दही बिलोकर मक्खन निकालना चाह रही थीं।

12) कैसी बूंदें पड़ रही थीं।

उत्तर- नन्हीं-नन्हीं बूंदें पड़ रही थीं।

13) मीरा को सावन मन भावन क्यों लगने लगा?

उत्तर- मीरा को सावन मन भावन लगने लगा, क्योंकि सावन के आते ही उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक हो गई।

14) सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत कब और किसने की?

उत्तर- सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत मंगल पांडे ने मार्च 1857 में बैरकपुर सैनिक छावनी से की थी।

15) वीर कुंवर सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का जन्म 1782 ई० में बिहार में शाहाबाद जिले के जगदीशपुर में हुआ था।

16) बाबू कुँवर सिंह ने रियासत की जिम्मेदारी कब सँभाली?

उत्तर- बाबू कुँवर सिंह ने अपने पिता की मृत्यु के बाद 1827 में रियासत की जिम्मेदारी सँभाली।

17) गांधी जी कौन-सा आश्रम बना रहे थे?

उत्तर- गांधी जी अहमदाबाद में साबरमती आश्रम बना रहे थे।

18) आश्रम में शुरुआत में कितने लोग थे?

उत्तर- आश्रम में शुरुआत में चालीस लोग थे।

19) पुस्तकालय में कितनी पुस्तकें रखी जाती थीं?

उत्तर- पुस्तकालय में तीन हजार पुस्तकें रखी जाती थीं।

20) शिक्षण के सामान में कितने हथकरघों की आवश्यकता होगी?

उत्तर- पाँच-छह देशी हथकरघों की आवश्यकता होगी।

21) गांधी जी ने आश्रम की स्थापना कब की थी?

उत्तर- गांधी जी ने आश्रम की स्थापना दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद की थी।

22) कवि अन्य कवियों से क्या आह्वान करता है?

उत्तर- क्रांतिकारी गीत की रचना के लिए आह्वान करता है।

23) क्रांति लाने के लिए कवि किसका सहारा लेता है?

उत्तर- क्रांति लाने के लिए कवि गीत का सहारा लेता है।

24) कवि के कंठ से निकले गीत का क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर- कवि के कंठ से निकले गीत जीर्ण-शीर्ण विचारधाराओं और रुढ़िवादी विचारों का नाश हो जाएगा।

बाल-महाभारत

प्रश्न-1 भीष्म ने युधिष्ठिर के संधि प्रस्ताव को सुनकर क्या सलाह दी?

उत्तर - भीष्म ने सलाह दी कि पांडवों को उनका राज्य वापस देना ही न्यायोचित होगा।

प्रश्न-2 संधि प्रस्ताव के विषय में अंत में धृतराष्ट्र ने क्या निश्चय किया?

उत्तर- सारे संसार की भलाई को ध्यान में रखकर धृतराष्ट्र ने अपनी तरफ से संजय को दूत बनाकर पांडवों के पास भेजने का निश्चय किया।

प्रश्न-3 पहले श्रीकृष्ण किसके भवन में गए?

उत्तर - पहले श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के भवन में गए।

प्रश्न-4 श्रीकृष्ण हस्तिनापुर किस उद्देश्य से गए?

उत्तर - शांति की बातचीत करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गए।

प्रश्न-5 धृतराष्ट्र से मिलने के बाद श्रीकृष्ण किससे मिलने गए?

उत्तर - धृतराष्ट्र से विदा लेकर श्रीकृष्ण विदुर के भवन में गए। कुंती वहीं कृष्ण की प्रतीक्षा में बैठी थी।

प्रश्न-6 श्रीकृष्ण को ठहराने का प्रबंध कहाँ किया गया और क्यों?

उत्तर- दुःशासन का भवन दुर्योधन के भवन से अधिक ऊँचा और सुंदर था। इसलिए धृतराष्ट्र ने आज्ञा दी कि उसी भवन में श्रीकृष्ण को ठहराने का प्रबंध किया जाए।

प्रश्न-7 कौरवों की सेना के नायक कौन थे?

उत्तर - कौरवों की सेना के नायक भीष्म पितामह थे।

प्रश्न-8 किसे पांडवों की सेना का नायक बनाया गया?

उत्तर - वीर कुमार धृष्टद्युम्न को पांडवों की सेना का नायक बनाया गया।

प्रश्न-9 घटोत्कच कौन था?

उत्तर - घटोत्कच भीम का पुत्र था।

प्रश्न-10 चौथे दिन के युद्ध में दुर्योधन के कितने भाई मारे गए?

उत्तर - चौथे दिन के युद्ध में दुर्योधन के आठ भाई मारे गए।

प्रश्न-11 घटोत्कच के क्रोध का क्या कारण था?

उत्तर- अपने पिता को मूर्च्छित देखकर घटोत्कच को क्रोध आ गया।

प्रश्न-12 कुमार शंख की मृत्यु कब हुई?

उत्तर - सातवें दिन के युद्ध में कुमार शंख की मृत्यु कब हुई।

प्रश्न-13 आठवें दिन के युद्ध में भीमसेन ने धृतराष्ट्र के कितने बेटों का वध किया?

उत्तर – आठवें दिन के युद्ध में भीमसेन ने धृतराष्ट्र के आठ बेटों का वध किया।

प्रश्न-14 द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह किसने तोड़ा?

उत्तर – द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह अभिमन्यु ने तोड़ा।

प्रश्न-15 तेरहवें दिन अर्जुन को युद्ध के लिए किसने ललकारा?

उत्तर- तेरहवें दिन संशप्तकों (त्रिगर्ता) ने अर्जुन को युद्ध के लिए ललकारा।

प्रश्न-16 तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ किस दिशा की ओर चले गए?

उत्तर – तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ दक्षिण दिशा की ओर चले गए।

प्रश्न-17 मद्रराज शल्य का वध किसने किया?

उत्तर – मद्रराज शल्य का वध युधिष्ठिर ने किया।

प्रश्न-18 शकुनि का वध किसने किया?

उत्तर – शकुनि का वध सहदेव ने किया।

प्रश्न-19 कर्ण के बाद कौरव - सेना का सेनापति किसे नियुक्त किया गया?

उत्तर – कर्ण के बाद कौरव - सेना का सेनापति मद्रराज शल्य को नियुक्त किया गया।

प्रश्न-20 द्रोण के मारे जाने पर कौरव-पक्ष के राजाओं ने किसको सेनापति मनोनीत किया?

उत्तर – द्रोण के मारे जाने पर कौरव-पक्ष के राजाओं ने कर्ण को सेनापति मनोनीत किया।

* लघु उत्तरीय

1) गांधी जी को आश्रम के लिए कितने स्थान की ज़रूरत थी और क्यों?

उत्तर- साबरमती आश्रम में लगभग 40-50 लोगों के रहने, इनमें हर महीने दस अतिथियों के आने की संभावना, जिनमें तीन या पाँच सपरिवार आने की उम्मीद थी। अतः आश्रम में तीन रसोईघर तथा रहने के मकान के लिए 50,000 फुट क्षेत्रफल में बने मकान की आवश्यकता थी। इसके अलावे-खेती के लिए पाँच एकड़ जमीन की ज़रूरत थी, क्योंकि इतने लोगों के भोजन का सामान खरीदना कठिन था।

2) कवि विप्लव गान क्यों गाना चाहता है?

उत्तर- कवि का मानना है कि विप्लव गान द्वारा ही वह लोगों को समाज के नवनिर्माण के लिए जाग्रत कर सकता है, क्योंकि सुंदर राष्ट्र की नींव पुराने, गले-सड़े रीति-रिवाजों व रूढ़िवादी विचारों पर नहीं रखा जा सकता।

3) आजमगढ़ की ओर जाने का वीर कुंवर सिंह का क्या उद्देश्य था?

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का आजमगढ़ जाने का उद्देश्य था, इलाहाबाद तथा बनारस पर आक्रमण कर शत्रुओं को पराजित करना। उस पर अपना अधिकार जमाना। अंततः उन्होंने इन पर अधिकार करने के बाद जगदीश पर भी कब्जा जमा लिया। उन्होंने अंग्रेजों को दो बार हराया। उन्होंने 22 मार्च 1858 को आजमगढ़ पर भी अधिकार कर लिया। उन्होंने अंग्रेजों को दो बार हराया। वे 23 अप्रैल 1858 को स्वाधीनता की विजय-पताका फहराते हुए जगदीशपुर तक पहुंच गए।

4) वीर कुंवर सिंह ने अपना बायाँ हाथ गंगा मैया को समर्पित क्यों किया?

उत्तर- जब कुंवर सिंह शिवराजपुर नामक स्थान से सेनाओं को गंगा पार करवा रहे थे तो अंतिम नाव पर वे स्वयं बैठे थे। उसी समय उनकी खोज में अंग्रेज सेनापति डगलस आया। उसने गोलियाँ बरसानी शुरू कर दी। उसी समय दूसरे तट से अंग्रेजों की एक गोली उनके बाएँ हाथ में लगी। शरीर में जहर फैलने के डर से कुंवर सिंह ने तत्काल अपनी तलवार निकाली और हाथ काटकर गंगा में भेंट कर दिया।

5) माता यशोदा अपने कृष्ण को किस प्रकार और क्या कहकर जगा रही है?

उत्तर- माता यशोदा अपने ललना श्रीकृष्ण को तरह-तरह के संकेत देकर जगाती है। वह अपने पुत्र से कहती है कि हे वंशीवाले प्यारे कन्हा! जागो रात बीत चुकी है। सुबह हो गई है। घरों के दरवाजे खुल गए हैं। गोपियाँ दही बिलो रही हैं। ग्वाल बाल द्वार पर खड़े होकर तुम्हारी जयकार कर रहे हैं। यानी वे गावों को लेकर जाने की

तैयारी में हैं।

6) मीरा ने सावन का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर- कविता के दूसरे पद में मीरा ने सावन का वर्णन अनुपम ढंग से किया है। वे कहती हैं कि सावन के महीने में मन-भावन वर्षा हो रही है। सावन के आते ही मन में उमंग आ जाती है। उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक लग जाती है। चारों ओर से बादल उमड़-घुमड़ कर आ रहे हैं, बिजली चमक रही है, नन्हीं-नन्हीं बूंदें पड़ रही हैं तथा मंद-मंद शीतल वायु चल रही है।

7) खानपान संस्कृति का "राष्ट्रीय एकता" में क्या योगदान है?

उत्तर- खानपान संस्कृति का राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान है। खाने-पीने के व्यंजनों का प्रभाव एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में बढ़ता जा रहा है। उदाहरण के तौर पर उत्तर भारत के व्यंजन दक्षिण व दक्षिण के व्यंजन उत्तर भारत में अब काफ़ी प्रचलित हैं। इससे लोगों के मेलजोल भी बढ़ता जा रहा है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

8) रहीम ने क़ार के बादलों की तुलना किससे और क्यों की है?

उत्तर- रहीम ने क़ार के बादलों की तुलना उन लोगों से की है जो अमीरी से निर्धन हो चुके हैं। निर्धन लोग जब उन दिनों की बात करते हैं, जब वे धनी तथा सुखी थी, तो उनकी बातें पूर्णतः क़ार के बादलों की खोखली गरज जैसी होती है। क़ार बादल गरजते भर हैं, कभी बरसते नहीं, उसी प्रकार धनी लोग निर्धन होकर अपनी अमीरी की बातें करते हैं।

9) पाठ के किन प्रसंगों से आपको पता चलता है कि कुँवर सिंह साहसी, उदार एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे?

उत्तर- वीर कुँवर सिंह जगदीशपुर हार जाने के बाद भी संघर्ष को जारी रखा और अंततः उन्होंने जगदीशपुर पर पुनः अधिकार कर लिया। इतना ही नहीं, वे वीर एवं बहादुर भी थे। उन्होंने गंगा की तेज़ धारा में गोली से जख्मी अपने हाथ को काटने में जरा भी संकोच नहीं किया। वे एक उदार व्यक्ति थे। अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति होने के बाद भी वे निर्धनों की। सहायता से पीछे नहीं हटते थे। उनमें स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा था। देशवासियों पर अंग्रेजों के जुर्म और अत्याचार बर्दाश्त नहीं कर सके और वे अंग्रेजों से युद्ध करने के लिए तैयार हो गए।

10) कविता के मूलभाव को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसका शीर्षक 'विप्लव-गायन' क्यों रखा गया होगा?

उत्तर- कविता का मूल भाव है गलत रीति-रिवाजों, रूढ़िवादी विचारों व परस्पर भेदभाव त्यागकर नवनिर्माण के लिए जनता को प्रेरित करना। इसीलिए इस कविता का शीर्षक 'विप्लव-गायन' रखा गया है जिसका अर्थ है क्रांति के लिए आह्वान करना।

*** दीर्घ उत्तर प्रश्न**

1) रहीम के दोहों से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर- रहीम के दोहों से हमें सीख मिलती है कि हमें अपने मित्र का सुख-दुख में बराबर साथ देना चाहिए। हमारे मन में परोपकार की भावना होनी चाहिए। जिस प्रकार प्रकृति हमारे लिए सदैव परोपकार करती है, उसी प्रकार हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। रहीम वृक्ष और सरोवर की ही तरह संचित धन को जन कल्याण में खर्च करने की सीख देते हैं। अंतिम दोहे में रहीम हमें सीख देने का प्रयास करते हैं, कि धरती की तरह जीवन में सुख-दुख को समान रूप से सहन करने की शक्ति रखनी चाहिए।

2) कहानी में अप्पू ने बार-बार जॉर्ज को याद किया है? इसका क्या कारण था?

उत्तर- जॉर्ज कंचे का अच्छा खिलाड़ी है। वह अप्पू का सहपाठी था। चाहे कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ कंचा खेले, उससे वह हार जाएगा। हारे हुए खिलाड़ी को अपनी बंद मुट्ठी जमीन पर रखनी पड़ती थी। तब

जॉर्ज कंचा चलाकर बंद मुट्टी के जोड़ों की हड्डी तोड़ता है। अप्पू सोचता है कि जॉर्ज के आते ही वह उसे लेकर कंचे खरीदने जाएगा और उसके साथ खेलेगा। अप्पू की इस सोच के पीछे शायद यह कारण था कि जॉर्ज के साथ रहने से उसे हार का सामना नहीं करना पड़ेगा। इतना ही नहीं, वह सोचता है कि जॉर्ज के साथ रहने पर कक्षा में उसका कोई हँसी नहीं उड़ाएगा। इसके अलावे वह जॉर्ज के अतिरिक्त किसी को खेलने नहीं देगा।

3) 1857 के आंदोलन में वीर कुंवर सिंह के योगदानों का वर्णन करें।

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का 1857 के आंदोलन में निम्नलिखित योगदान है कुँवर सिंह वीर सेनानी थे। 1857 के विद्रोह में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया व अंग्रेजों को कदम-कदम पर परास्त किया। कुंवर सिंह की वीरता पूरे भारत द्वारा भुलाई नहीं जा सकती। आरा पर विजय प्राप्त करने पर इन्हें फौजी सलामी भी दी गई। इसके अलावे इन्होंने बनारस, मथुरा, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानों पर जाकर विद्रोह की सक्रिय योजनाएँ बनाईं। उन्होंने विद्रोह का सफल नेतृत्व करते हुए दानापुर और आरा पर विजय प्राप्त की। जगदीशपुर में पराजित होने के बावजूद सासाराम से मिर्जापुर, रीवा, कालपी होते हुए कानपुर पहुँचे। उनकी वीरता की ख्याति दूर-दूर स्थान में पहुँच गई। उन्होंने आजमगढ़ पर अधिकार करने के बाद अपनी मातृभूमि जगदीशपुर पर पुनः आधिपत्य जमा लिया। इस प्रकार उन्होंने मरते दम तक अपनी अमिट छाप पूरे देश पर छोड़ा।

4) गांधी जी ने आश्रम के अनुमानित खर्च का ब्यौरा क्यों तैयार किया?

उत्तर- गांधी जी द्वारा लिखे गए पाठ 'आश्रम का अनुमानित व्यय' से हमें सीख मिलती है कि यदि हम कोई भी कार्य करना चाहें तो सोच-समझकर पहले ब्यौरा बना लेना चाहिए ताकि उसके अनुमानित खर्च को भी जाना जा सके तथा इस हिसाब से आगे बढ़ने का रास्ता भी साफ़ दिखाई देने लगता है। गांधी जी एक ऐसे आश्रम की स्थापना कर रहे थे। इसके लिए स्थान की ज़रूरत थी, आवश्यक वस्तुओं, पुस्तकों, भोजन की व्यवस्था करने की ज़रूरत थी। वहाँ सत्याग्रह तथा स्वदेशी आंदोलन की योजनाएँ तैयार करनी थीं। वह आश्रम एक दो दिन के लिए नहीं, लंबे समय के लिए बनाया जा रहा था। अतः स्थायी व्यवस्था के लिए गांधी ने खर्च का लेखा-जोखा तैयार दिया।

5) गांधी जी के अनुसार आश्रम में कौन-कौन से खर्च थे? वह उसे कहाँ से जुटाना चाहते थे?

उत्तर- गांधी जी के अनुसार यदि अन्य खर्च अहमदाबाद उठा ले, तो वह खाने का खर्च जुटा लेंगे। उनके अनुसार आश्रम के मद में निम्नलिखित खर्च थे।

1. मकान और जमीन का किराया।
2. किताबों की अलमारियों का खर्च।
3. बढ़ई के औजार।
4. मोची के औजार।
5. चौके के सामान।
6. एक बैलगाड़ी या घोडागाड़ी।
7. एक वर्ष में भोजन का खर्च- 6000 रु०।

6) कवि के अनुसार जीवन का रहस्य क्या है?

उत्तर- कवि के अनुसार, कवि विप्लव के माध्यम से परिवर्तन की हिलोर लाना चाहता है। इस कविता का भाव है जीवन का रहस्य है। विकास और गतिशीलता में रुकावट पैदा करने वाली प्रवृत्ति से संघर्ष करके नया निर्माण करना। नव-निर्माण के लिए कवि विध्वंस और महानाश को आवश्यक मानता है। यह विनाश सदियों से चली आ रही रुढ़िवादी मानसिकता, जड़ता तथा अंधविश्वास को काटकर दूर फेंक देगा। सारी रुकावट समाप्त कर नए सृजन तथा नए राष्ट्र को निर्माण का रास्ता साफ़ हो जाएगा। इसके लिए कवि द्वारा एक क्रांति की चिंगारी जलाने की ज़रूरत है।

(7) नीलकंठ चिड़ियाघर के अन्य जीव-जंतुओं का मित्र भी था और संरक्षक भी। वह कैसे?

उत्तर- लेखिका कहती है कि उन्हें पता नहीं चला कि अपने स्वभाव और संस्कारवश मोर ने स्वयं को अन्य सभी जीवों का रक्षक और सेनापति कब नियुक्त कर लिया। वह सबको लेकर उस स्थान पर पहुँच जाता जहाँ दाना बिखेरा जाता। वह घूम-घूमकर रखवाली करता और अगर किसी ने गड़बड़ की तो उसे दंडित भी करता था। वह उन सब का मित्र तो था ही। एक बार साँप ने खरगोश के बच्चे का आधा हिस्सा अपने मुँह में दबा लिया। वह चीख नहीं सकता था। नीलकंठ ने उसका धीमा स्वर सुन लिया और उसने नीचे उतरकर साँप को फन के पास पंजों से दबाया और चोंच-चोंच मारकर उसे अधमरा कर दिया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश उसके मुँह से निकल आया। मोर रात भर उसे अपने पंखों के नीचे रखकर गरमी देता रहता।

(8) कुब्जा के जीवन का अंत कैसे हुआ?

उत्तर- नीलकंठ की मृत्यु के बाद कुब्जा भी कोलाहल के साथ उसे ढूँढ़ना शुरू कर दिया। वह आम, अशोक कचनार की शाखाओं में ढूँढ़ती रहती। एक दिन आम की शाखा से उतरते ही अलसेशियन कुतिया उसके सामने पड़ गई। स्वभाववश कुब्जा ने चोंच से उस पर प्रहार किया तो कजली के दो दाँत उसकी गरदन पर लग गए। परिणामतः उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार उसके कलह-कोलाहल तथा द्वेष-प्रेम भरे जीवन का अंत हुआ।

